सिद्ध कुंजिका स्तोत्र

Siddha Kunjika Stotram – संस्कृत, हिंदी अर्थ सहित

॥ अथ सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम् ॥

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् ॥१ ॥

अर्थ: भगवान शिव बोले: हे देवी, सुनो! मैं तुम्हें श्रेष्ठ कुंजिका स्तोत्र बताता हूँ, जिसके मंत्र के प्रभाव से चंडी (दुर्गा सप्तशती) का जप शुभ और सफल हो जाता है।

न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥२ ॥

अर्थ: इसके पाठ के लिए न देवी कवच की आवश्यकता है, न अर्गला स्तोत्र की, न कीलक की, न रहस्य की, न सूक्त की, न ध्यान की, न न्यास की और न ही विस्तृत पूजा-अर्चना की।

कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् ।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥३ ॥

अर्थ: केवल कुंजिका के पाठ से ही पूरे दुर्गा पाठ का फल मिल जाता है। हे देवी, यह अत्यंत गोपनीय है और देवताओं के लिए भी दुर्लभ है।

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥४ ॥

अर्थ: हे पार्वती, इसे बड़े यत्न से अपनी सबसे निजी वस्तु की तरह गुप्त रखना चाहिए। यह उत्तम कुंजिका स्तोत्र केवल पाठ से ही मारण, मोहन, वशीकरण, स्तंभन और उच्चाटन जैसे सभी प्रयोजनों को सिद्ध करने वाला कहा गया है। (भक्ति परंपरा में इन शब्दों का आंतरिक अर्थ भी लिया जाता है, जैसे काम-क्रोध का नाश और मन का वश में होना।)

अथ मन्त्रः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥
ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥

॥ इति मन्त्रः ॥

अर्थ: यह स्तोत्र का मूल मंत्र है। पहली पंक्ति माँ चामुंडा का प्रसिद्ध नवार्ण मंत्र है। आगे के बीजाक्षर देवी की शक्ति को जगाने (ज्वालय, प्रज्वल) की प्रार्थना हैं। परंपरा के अनुसार बीज मंत्रों का शब्दशः अर्थ खोजना आवश्यक नहीं, इन्हें श्रद्धा और शुद्ध उच्चारण से जपना ही पर्याप्त माना गया है।

chalisa-pdf.com

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि ।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥१ ॥

अर्थ: हे रुद्र रूप वाली देवी, आपको नमस्कार। मधु नामक दैत्य का मर्दन करने वाली, आपको नमस्कार। कैटभ का संहार करने वाली और महिषासुर को मारने वाली माँ, आपको बार-बार नमस्कार।

नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि ॥२ ॥

अर्थ: शुंभ का वध करने वाली और निशुंभ असुर का नाश करने वाली देवी, आपको नमस्कार।

जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे ।
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका ॥३ ॥

अर्थ: हे महादेवी, मेरे जप को जाग्रत और सिद्ध कीजिए। 'ऐं' बीज के रूप में आप सृष्टि रचने वाली हैं और 'ह्रीं' बीज के रूप में संसार का पालन करने वाली हैं।

क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते ।
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी ॥४ ॥

अर्थ: 'क्लीं' बीज के रूप में आप इच्छाओं को पूरा करने वाली हैं, हे बीज रूपिणी, आपको नमस्कार। चामुंडा रूप में आप चंड दैत्य का नाश करती हैं और 'यै' अक्षर के रूप में वरदान देती हैं।

विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥५ ॥

अर्थ: 'विच्चे' के रूप में आप सदा अभय देती हैं। हे मंत्र रूप वाली माँ, आपको नमस्कार।

धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी ।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥६ ॥

अर्थ: 'धां धीं धूं' के रूप में आप धूर्जटी शिव की पत्नी हैं, 'वां वीं वूं' के रूप में वाणी की स्वामिनी हैं। 'क्रां क्रीं क्रूं' के रूप में आप कालिका देवी हैं। 'शां शीं शूं' के रूप में मेरा कल्याण कीजिए।

हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी ।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥७ ॥

अर्थ: 'हुं हुं' हुंकार रूप वाली, 'जं जं जं' की गर्जना करने वाली, 'भ्रां भ्रीं भ्रूं' के रूप में कल्याणकारी भैरवी, हे भवानी, आपको बार-बार नमस्कार।

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ॥८ ॥

अर्थ: इन बीजाक्षरों द्वारा प्रार्थना है कि हे माँ, साधना की सभी रुकावटों को तोड़िए और मंत्र को दीप्त (प्रकाशित) कीजिए। 'पां पीं पूं' के रूप में आप पूर्ण पार्वती हैं और 'खां खीं खूं' के रूप में आकाश में विचरने वाली खेचरी हैं।

सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥

अर्थ: 'सां सीं सूं' के रूप में विराजमान देवी, मेरे लिए सप्तशती के मंत्रों को सिद्ध कीजिए।

chalisa-pdf.com

इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे ।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥

अर्थ: यह कुंजिका स्तोत्र मंत्रों को जाग्रत करने के लिए है। हे पार्वती, इसे भक्ति-रहित व्यक्ति को नहीं देना चाहिए, इसे सुरक्षित और गोपनीय रखो।

यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत् ।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥

अर्थ: हे देवी, जो व्यक्ति कुंजिका के बिना सप्तशती का पाठ करता है, उसे वैसे ही सिद्धि नहीं मिलती जैसे जंगल में रोने का कोई फल नहीं होता।

॥ इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

chalisa-pdf.com

Siddha Kunjika Stotram Lyrics in English

Shiva Uvacha
Shrinu devi pravakshyami kunjika-stotram-uttamam
Yena mantra-prabhavena chandi-japah shubho bhavet ||1||

Na kavacham nargala-stotram kilakam na rahasyakam
Na suktam napi dhyanam cha na nyaso na cha varchanam ||2||

Kunjika-patha-matrena durga-patha-phalam labhet
Ati guhyataram devi devanam-api durlabham ||3||

Gopaniyam prayatnena svayoniriva parvati
Maranam mohanam vashyam stambhanochchatanadikam
Patha-matrena samsiddhyet kunjika-stotram-uttamam ||4||

Atha Mantrah
Om Aim Hrim Klim Chamundayai Vichche
Om Glaum Hum Klim Jum Sah Jvalaya Jvalaya Jvala Jvala Prajvala Prajvala
Aim Hrim Klim Chamundayai Vichche Jvala Ham Sam Lam Ksham Phat Svaha
Iti Mantrah

Namaste rudra-rupinyai namaste madhu-mardini
Namah kaitabha-harinyai namaste mahisha-ardini ||1||

Namaste shumbha-hantryai cha nishumbhasura-ghatini ||2||

Jagratam hi mahadevi japam siddham kurushva me
Aimkari srishti-rupayai hrimkari pratipalika ||3||

Klimkari kama-rupinyai bija-rupe namostu te
Chamunda chanda-ghati cha yaikari varadayini ||4||

Vichche chabhayada nityam namaste mantra-rupini ||5||

Dham dhim dhum dhurjateh patni vam vim vum vagadhishvari
Kram krim krum kalika devi sham shim shum me shubham kuru ||6||

Hum hum humkara-rupinyai jam jam jam jambha-nadini
Bhram bhrim bhrum bhairavi bhadre bhavanyai te namo namah ||7||

Am kam cham tam tam pam yam sham vim dum aim vim ham ksham
Dhijagram dhijagram trotaya trotaya diptam kuru kuru svaha
Pam pim pum parvati purna kham khim khum khechari tatha ||8||

Sam sim sum saptashati devya mantra-siddhim kurushva me

chalisa-pdf.com

Idam tu kunjika-stotram mantra-jagarti-hetave
Abhakte naiva datavyam gopitam raksha parvati

Yastu kunjikaya devi hinam saptashatim pathet
Na tasya jayate siddhir-aranye rodanam yatha

और भी चालीसा, आरती व स्तोत्र PDF के लिए देखें: www.chalisa-pdf.com

chalisa-pdf.com